शतवार्षिकी पर नाट्य महोत्सव

एशिया का पहला और आज तक के सबसे बडे महिला विश्वविद्यालय के रूप में गौरवान्वित एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय भारतरत्न स्व. महर्षि धोण्डो केशव कर्वे की युगांतकारी सोच व तपस्या का सुफल है।

इस वर्ष (2015-16) यह विवि अपनी शतवार्षिकी मना रहा है, जिसके दौरान कुलगुरु प्रो. वसुधा कामत एवं प्र. कुलगुरु प्रो. वन्दना चक्रबर्ती के नियोजन व निर्देशन में पूरे वर्ष सभी विभाग विविध प्रकार के शैक्षणिक-सांस्कृतिक आयोजन कर ही रहे हैं, विश्वविद्यालय के केन्द्रीय कार्यालय द्वारा भी व्यापक पैमाने पर कार्यक्रमों की शृंखला में नाट्य, संगीत, नृत्य व फिल्म के चार महोत्सव भी संकल्पित हैं, जिसकी शुरुआत प्रो सत्यदेव त्रिपाठी के संयोजन में नाट्य महोत्सव से हुई। 1 से 4 अक्तूबर के दौरान सायं 5.30 बजे विद्यापीठ के चर्चगेट परिसर में स्थित 'पाटकर सभागृह' में क्रमश: अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी व मराठी के चार नाटक खेले गये।

समारोह का उद्घाटन 'नेशनल कौंसिल ऑन स्किल डेवलेपेंट' के लिए भारतवर्ष के प्रधान मंत्री के सलाहकार एवं एनएसडीसी के अध्यक्ष श्री रामादुराइ व एसएनडीटी विवि की भूतपूर्व कुलगुरु प्रो. रूपा शाह द्वारा दीपप्रज्ज्वलन एवं शुभासंशाओं से सम्पन्न हुआ।

1 अक्तूबर की शाम दिग्गज रंगकर्मी श्री नसीरुद्दीन शाह के निर्देशन व उन्हीं के एकल अभिनय में 'मोटली' की निर्मिति 'आइंस्टाइन' का मंचन हुआ। मात्र सवा घण्टे में उस महान वैज्ञानिक का समूचा जीवन, चिंतन एवं व्यक्तित्त्व की जो बारीक नक्काशी जिस सचाई व सफाई से साकार हुई, वह नसीरजी के अलावा कहीं और शायद असम्भव ही हो। इसे देखना

दूसरे दिन 2 अक्तूबर को गान्धी-जयंती के अवसर पर गुजराती का नाटक खेला गया - 'मरीज़', जो 'गुजराती के ग़ालिब' के रूप में विख्यात शायर वासी अब्बास अब्दुल अली 'मरीज़' के जीवन पर आधारित है। एक सच्चे शायर का ख़्वाब जब हू-ब-हू जीवन में उतरता है, तो उसकी जिन्दगी तो नर्क बनती है, पर कला अपनी चरम ऊँचाइयों तक पहुँचती है, का जीवंत प्रमाण है 'मरीज़' - 'जब कला कला नहीं, जीवन बने; मेरी कविता जग का आवेदन बने'। तभी तो 'आइडिया अनलिमिटेड' रंग समूह के लिए उसके कुशल संचालक श्री मनोज शाह, जिन्हें अमर साहित्यकारों पर 'गुजरात नी अस्मिता' प्रस्तुत करने में महारत हासिल, के निर्देशन में बना यह नाटक आधुनिक क्लासिक सिद्ध हुआ है।

महोत्सव की तीसरी शाम पूर्वा नरेश के निर्देशन में उन्हीं द्वारा संचालित नाट्यसमूह 'आरम्भ, मुम्बई' का हिन्दी नाटक पेश हुआ - 'आज रंग है'। लगभग 35 कलाकारों के अभिनय में अमीर ख़ुशरो की शायरी व संगीत तथा लखनऊ के गायकों की जीवंत (लाइव) गायकी व साजिन्दों से

सजा यह आज के समय का एक विरल नाटक है, जो बहुत बार कही गयी साम्प्रदायिकता की बात को जिस निराले अन्दाज़ में कहता है, उसे देखना एक आह्लादक अनुभव रहा।

नाट्योत्सव सम्पन्न हुआ 4 अक्तूबर की शाम मराठी के नाटक 'दोन स्पेशल' से। प्रसिद्ध कथाकार ह.मो. मराठे की कहानी पर आधारित क्षितिज पटवर्धन के निर्देशन व जीतेन्द्र जोशी तथा सविता ओक के सधे अभिनय में पत्रकारिता के माध्यम से आज के टूटते जीवनमूल्यों की त्रासदी को दिखाता यह नाटक आज की मराठी रंगभूमि पर अपना अलग स्थान बना सका है।

ऐसे उत्कृष्ट नाटकों के लिए विश्वविद्यालय के बुद्धिजीवी प्राध्यापकों, सुबुद्ध कर्मचारियों व प्रबुद्ध छात्राओं के अलावा शहर के साहित्य, नाट्य व मीडिया क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने भरपूर आनन्द उठाया। विश्वविद्यालय के सौवें साल के इस नाट्यमय जश्न के लुत्फ़ ने लोगों की चेतना में बाकी महोत्सवों की प्यास भी जगा दी है.....